**भगत परमानंद - सबद १**

**तै नर किआ पुरानु सुनि कीना ॥**

**रागु सारंग, भगत परमानंद, गुरु ग्रंथ साहिब, १२५३**

तै नर किआ पुरानु सुनि कीना ॥
अनपावनी भगति नही उपजी भूखै दानु न दीना ॥१॥ रहाउ ॥
कामु न बिसरिओ क्रोधु न बिसरिओ लोभु न छूटिओ देवा ॥
पर निंदा मुख ते नही छूटी निफल भई सभ सेवा ॥१॥
बाट पारि घरु मूसि बिरानो पेटु भरै अप्राधी ॥
जिहि परलोक जाइ अपकीरति सोई अबिदिआ साधी ॥२॥
हिंसा तउ मन ते नही छूटी जीअ दइआ नही पाली ॥
परमानंद साधसंगति मिलि कथा पुनीत न चाली ॥३॥१॥६॥

**सार:** ग्रंथों में ज्ञानी संतों का सार समाहित है जो हमें उनके शब्दों को दोहराने के बजाय उनके अनुभवों पर चिंतन करने के लिए प्रेरित करता है। आध्यात्मिक विकास तब संभव होता है जब इन अंतर्दृष्टियों का अभ्यास किया जाता है, व्यक्तिगत अनुभव से परखा जाता है और आत्मनिरीक्षण के माध्यम से इन्हें और गहन किया जाता है। इस प्रकार के आंतरिक एकीकरण के बिना, मन शोषण की ओर अग्रसर होकर, दूसरों से लाभ उठाते हुए अपनी अंतहीन इच्छाओं को उचित ठहरा सकता है। इससे अंतरात्मा कमज़ोर होती है जिससे स्वयं को हानि पहुँचती है और समाज में अच्छाई का पतन होता है। सार्थक शिक्षा तब शुरू होती है जब ज्ञान, ग्रंथों से आचरण में परिवर्तित होता है और जागरूकता को नैतिक उत्तरदायित्व में बदलता है।

तै नर किआ पुरानु सुनि कीना ॥
हे मनुष्य, धर्म-ग्रंथों को सुनकर तुमने वास्तव में क्या समझा है? यह संकेत करता है कि सिर्फ़ दार्शनिक बातें सुन लेना काफ़ी नहीं है जब तक वह अंतरात्मा की गहराई तक न पहुँचें और जीवन में सार्थक बदलाव न लाएँ, तब तक उनका कोई लाभ नहीं।

अनपावनी भगति नही उपजी भूखै दानु न दीना ॥१॥ रहाउ ॥
अटल भक्ति अभी उत्पन्न नहीं हुई है और ज़रूरतमंदों की मदद करने की इच्छा भी नहीं है। यह दर्शाता है कि सच्ची भक्ति का अर्थ सिर्फ़ किसी धर्म से जुड़े रहना नहीं है बल्कि यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह समर्पण दूसरों के प्रति दया और उदारता के कर्मों में कैसे बदलता है। (१)(विराम)

कामु न बिसरिओ क्रोधु न बिसरिओ लोभु न छूटिओ देवा ॥
अनियंत्रित इच्छाओं पर क़ाबू नहीं पाया गया है, क्रोध पर विजय नहीं मिली है, लालच से छुटकारा नहीं मिला है। हे आदरणीय मानव, यह ऐसी अज्ञानी सोच को दिखाता है जो अभी भी लगाव के बंधनों में फंसी है, भले ही बाहर से पवित्रता या ज्ञान का दिखावा किया जा रहा हो।

पर निंदा मुख ते नही छूटी निफल भई सभ सेवा ॥१॥
दूसरों की बुराई और चुग़ली करना नहीं छोड़ा है, इसलिए, दूसरों की सेवा के प्रयास बेकार और निष्फल हो गए हैं। यह उस विरोधाभास को दिखाता है जहाँ बाहर से तो दयालु होने का दिखावा किया जाता है लेकिन शब्द, दूसरों को आहत कर सम्मान घटाते और अनादर करते हैं। (१)

बाट पारि घरु मूसि बिरानो पेटु भरै अप्राधी ॥
जो हक़ से हमारी नहीं हैं, उन चीज़ों को जीतकर, लूटकर या ग़लत तरीकों के संसाधनों का इस्तेमाल कर, उन्हें हासिल करके हम अपराधी बन जाते हैं। यह उस मानसिकता का चित्रण है जो शोषण पर आधारित होती है और अपनी अतृप्त इच्छाओं को उचित ठहराने के लिए निरंतर दूसरों से लेती रहती है।

जिहि परलोक जाइ अपकीरति सोई अबिदिआ साधी ॥२॥

जब गहराई से सोचते हैं तब अंतरात्मा को बुरे इरादों और नासमझी भरे कामों का पता चल जाता है। इसका मतलब है कि कर्मों का असर हमारे मन पर 'परलोक' जैसा होता है जिसके परिणाम अंतरात्मा में नकारात्मक या सकारात्मक भावनाओं के रूप में बने रहते हैं। (२)

हिंसा तउ मन ते नही छूटी जीअ दइआ नही पाली ॥

मन से हिंसा की भावना नहीं गई है और न ही दूसरों के प्रति दया का भाव अपनाया गया है। यह केवल शारीरिक हिंसा की बात नहीं करता बल्कि उस भावनात्मक कठोरता की ओर भी संकेत करता है जो दूसरों को समझने और स्वीकार करने में असफल रहती है।

परमानंद साधसंगति मिलि कथा पुनीत न चाली ॥३॥१॥६॥

परमानंद कहते हैं कि भले ही इंसान अच्छे लोगों की संगत में रहे, फिर भी वह नेक रास्ते को नहीं चुनता। इससे पता चलता है कि नेक लोगों का साथ भी सिर्फ़ लेन-देन तक ही सीमित रह सकता है जब तक कि अहंकार पर विनम्रता की जीत न हो और इंसान सच्चाई और नेकी के पथ पर न चले। (३)(१)(६)

**तत्त्व:** भक्त परमानंद सच्ची भक्ति के गहन और दयालु स्वभाव को बहुत प्रभावशाली ढंग से समझाते हैं। वह धर्मग्रंथों, सेवा और आध्यात्मिक संगति के महत्त्व को तो मानते हैं लेकिन जब यह केवल दिखावा, रोज़मर्रा की रस्म या सतही पहचान बनकर रह जाती हैं तब वह इनके असर पर तीखे सवाल भी उठाते हैं। सच्ची भक्ति तभी संभव होती है जब समझदारी, दया और सार्थक रिश्ते हमारे शब्दों और काम में सच्ची उदारता लाते हैं और हमें नकारात्मकता से मुक्त चरित्र बनाने में मदद करते हैं। इस समझ को अपनाने से हमारी आध्यात्मिक यात्रा गहन होती है और हमारा जीवन समृद्ध बनता है।

---

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

**Oneness In Diversity Research Foundation**

**वेबसाइट:** OnenessInDiversity.com

**ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com**